निर्वाचित अध्यक्ष का उद्‌गार

पंचम झारखण्ड विधान सभा के माननीय सदस्यगण, माननीय सदन नेता सहित सभी दल के माननीय नेतागण, सर्वसम्मति से आज इस विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में जिस तरीके से आपलोगों ने मेरा निर्वाचन किया है, इसके लिए मैं आप सभी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मेरे निर्वाचन के लिए कुल 6 प्रस्ताव आये थे। इनमें कई माननीय मत्रियों द्‌वारा प्रस्तावित थे और कई का समर्थन माननीय सदस्यों द्‌वारा किया गया था। संसदीय व्यवस्था के जो सुस्थापित नियम और परम्पराएं हैं, उसके अधीन मात्र एक प्रस्ताव को सभा में निर्णय के लिए लिया जाता है और सम्यक निर्णय के उपरांत अन्य प्रस्तावों को छोड़ दिया जाता है । इस दृष्टि से यद्‌यपि यह स्पष्ट है कि माननीय मुख्यमंत्री जी द्‌वारा रखे गये और श्री चम्पई सोरेन, माननीय सदस्य द्‌वारा समर्थित प्रस्ताव के आलोक में विधान सभा अध्यक्ष के रूप में मेरा निर्वाचन हो गया, फिर भी मैं केवल उनका नहीं वरन् समस्त सदन का कृतज्ञ हूँ। अध्यक्ष पद के इस आसन को ग्रहण करने के पूर्व तक मैं तकनीकी रूप से किसी खास राजनीतिक दल सम्बद्ध था लेकिन इस आसन पर आते ही मेरी वह राजनीतिक संबद्धता तकनीकी रूप से समाप्त हो गई है। अध्यक्ष के पद को संसदीय पद्धति में सरकार और प्रतिपक्ष का पद नहीं समझा जाता वरन् इस पद को आरंभ से ही निष्पक्षता का पर्यायवाची मानने की परम्परा रही है।

मैं संसदीय व्यवस्था के इस उच्च प्रतिमान के पालन का वचन सभा के तमाम माननीय सदस्यों को देता हूँ। सदन से बाहर की दुनिया में भले ही मेरी पहचान झारखण्ड मुक्ति मोर्चा के एक सदस्य के रूप में बनी रहेगी लेकिन सदन के भीतर मेरे लिए न्याय के तराजू पर पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों का पलड़ा बराबर रहेगा। राजनीति में मैंने अपने कद को हमेशा से छोटा समझा है। इस सभा में मैं अपने तीसरे कार्यकाल के लिए निर्वाचित हो कर आया हूँ। मेरे सामने कुछ ऐसे सदस्य भी हैं जो पहली बार इस सम्मानित सदन के सदस्य निर्वाचित हो कर आये हैं लेकिन ऐसे सदस्यों की संख्या भी कम नहीं है जिनका राजनीतिक कार्यकाल विधायक और सांसद के रूप में मेरी तुलना में बहुत ज्यादा लम्बा रहा है। अपने पद से जुड़े दायित्वों के निर्वहन में मैं ऐसे तमाम वरीय माननीय सदस्यों के मार्गदर्शन की अपेक्षा करूँगा। मेरे लिए यह सौभाग्य की बात है कि सदन में दो ऐसे माननीय सदस्य मौजूद हैं जिन्होंने अध्यक्ष के आसन को सम्पूर्ण निष्ठा से संभालने का काम किया है। संयोग से आज इनमें से एक श्री आलमगीर आलम सत्ता पक्ष में हैं और श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह जी प्रतिपक्ष में हैं। अध्यक्ष के रूप में इन दोनों का कार्यकाल शानदार रहा है। विपरीत परिस्थितियों में इनके द्‌वारा लिये गये निर्णय मेरे लिए भी नजीर के समान होगा। मैं माननीय सदस्य प्रो० स्टीफन मरांडी जी जो राजनीति में मेरे अग्रज और गुरुजन के समान हैं और इन्होंने दो महत्वपूर्ण अवसरों पर प्रोटेम स्पीकर के रूप में इस सभा में अपनी भूमिका निभाई है, के मार्गदर्शन की भी अपेक्षा मुझे बनी रहेगी। मुझे खुशी है कि आज का झारखण्ड श्री हेमंत सोरेन के युवा नेतृत्व के हाथों में है| वे राज्य के जनता का अटूट विश्वास अर्जन कर पाने में कर पाए हैं | इनके नेतृत्व में इस

राज्य का चतुर्दिक विकास होगा इसकी कामना मैं इस आसन से करता हूँ। श्री बाबूलाल मराण्डी जी को इस राज्य का प्रथम मुख्यमंत्री होने का गौरव प्राप्त है। इस पाँचवीं विधान सभा के लिए निर्वाचित हो कर आज वे हमारे बीच हैं। न्याय और विवेकयुक्त आचरण इनकी विशेषता रही है। मैं समय-समय पर इनके मार्गदर्शन की भी अपेक्षा करूँगा। आज का अवसर हमलोगों के बीच माननीया राज्यपाल महोदया के अभिभाषण का है और इनकी आगवानी से लेकर उनके प्रस्थान तक का व्यस्त कार्यक्रम आज है। व्यस्तता की ऐसी स्थिति में आज मैं आपसे कुछ विशेष परिचर्चा कर पाने की स्थिति में नहीं हूँ। आने वाले अवसरों पर हमलोगों के बीच व्यापक विचार विनिमय होंगे, इन्हीं उम्मीदों के साथ मैं सभा के तमाम सदस्यों के प्रति एक बार फिर अपना आभार प्रकट करता हूँ कि आप सभी ने मुझे ऐसे महान दायित्त्व के निर्वहन के योग्य समझा। मैं आप सभी को विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आप सभी के उम्मीदों पर खरा उतरने का भरपूर प्रयास करूंगा और अन्त में मैं अपने राजनीतिक गुरु, मार्गदर्शक और झारखण्ड के सर्वमान्य नेता परम आदरणीय दिशोम गुरुजी श्री शिबू सोरेन जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनके मार्गदर्शन से मुझे यहाँ तक पाहुचने का अवसर प्राप्त हुआ है।

धन्यवाद ।